JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/1

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ।

एवं-जाव-सव्वद्धा[1]

प०—पोग्गलपरियट्टा णं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ-जाव अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणंताओ ओसप्पिणीओ ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ३६-३८

उ०—गौतम ! संख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी नहीं हैं।

असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी भी नहीं हैं, अपितु अनन्त अवसर्पिणी उत्सर्पिणी हैं।

इसी प्रकार सर्वकाल की अवसर्पिणी उत्सर्पिणी हैं।

प्र०—भगवन् ! पुद्गल परिवर्तनों की अवसर्पिणियाँ और उत्सर्पिणियाँ संख्यात हैं—यावत्—**अनन्त हैं ?**

उ०—गौतम ! संख्यात अवसर्पिणियाँ उत्सर्पिणियाँ नहीं हैं, असंख्यात नहीं हैं, अनन्त हैं।

तीतद्धाइसु पोग्गलपरियट्टाणं अणंतत्तं—

अतीत काल के पुद्गल परिवर्तनों का अनन्तत्व—

३०. प०—तीतद्धा णं भंते ! किं संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा अणंता पोग्गलपरियट्टा ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, नो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा अणंता पोग्गलपरियट्टा ।

एवं अणागतद्धा वि ।

एवं सव्वद्धा वि ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ३९-४१

३०. प्र०—भगवन् ! अतीत काल के पुद्गल परावर्तन क्या संख्यात थे, असंख्यात थे, या अनन्त थे ?

उ०—गौतम ! संख्यात पुद्गल परिवर्तन नहीं थे, असंख्यात नहीं थे, अनन्त थे।

इसी प्रकार अनागत काल के पुद्गल परिवर्तन होंगे।

इसी प्रकार सर्वकाल के पुद्गल परिवर्तन हैं।

अणागयकालस्स अतीतकालओ समयाधिकत्तं—

अतीत काल से अनागत काल का समयाधिकत्व—

३१. प०—अणागयद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ, असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, अणंताओ तीतद्धाओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ ।

अणागयद्धा णं तीतद्धाओ समयाहिया,
तीतद्धाणं अणागयद्धाओ समयूणा ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४२

३१. प्र०—भगवन् ! अतीत काल से अनागत काल क्या संख्यात हैं, असंख्यात हैं या अनन्त हैं।

उ०—गौतम ! अतीत काल से संख्यात नहीं हैं, असंख्यात नहीं हैं, अनन्त नहीं है।

अतीत काल से अनागत काल एक समयाधिक हैं।
अनागत काल से अतीत काल एक समय कम हैं।

सव्वद्धाए अतीतकालओ साइरेगदुगुणत्तं—

अतीत काल से सर्वकाल का कुछ अधिक दुगुनापन—

३२. प०—सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ-जाव-अणंताओ तीतद्धाओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ-जाव-नो अणंताओ तीतद्धाओ ।

सव्वद्धा णं तीतद्धाओ साइरेगदुगुणा,
तीतद्धाणं सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४१

३२. **प्र०—भगवन् ! अतीत काल से सर्वकाल क्या संख्यात हैं ?** —यावत्—**अनन्त हैं ?**

उ०—गौतम ! अतीत काल से सर्वकाल न संख्यात हैं—यावत्—**न अनन्त हैं।**

अतीत काल से सर्वकाल कुछ अधिक हैं।
सर्वकाल से अतीत काल कुछ कम हैं।

---

१ एकवचन के सूत्र ।

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com